शिवरात्रि का महत्व

शिव जयन्ति का त्यौहार तो भारतवासी हर वर्ष मनाते रहते हैं, और इस पर्व पर शिव की मूर्ति पर जल, दूध की लोटी तथा बेलपत्र फूल आदि चढाते हैं। परन्तु यह सब करते हुए भी भारतवासी भक्तगण न इस पर्व के वास्तविक रहस्य को जानते हैं और न शिव के यथार्थ परिचय को ही जानते हैं। बिना परिचय किसी की यादगार मनाना न विवेक संगत बात कही जा सकती है न उससे कुछ लाभ ही मिल सकता है।

वास्तव में 'शिव स्वयं उस निराकार परमपिता परमात्मा का नाम है जो सारी सृष्टि के आत्माओं का पिता और अथवा ज्योर्तिलिंगम उस पिता का अंगुष्ठाकार ज्योति स्वरूप है। और परमधाम का निवासी है, वह सर्वव्यापी या नामरूप से न्यारा नही है। ऐसा मानना बहुत बड़ी भूल है, वह पिता कल्प-कल्प कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम पर अनेक अधर्मो का विनाश और एक सत्य धर्म की स्थापना करने हेतु अवतरित होकर मनुष्य आत्माओं को ज्ञान सुनाते और योग सिखाते हैं। इस ज्ञान योगबल से हमारे आत्मा पवित्र बनती है और पवित्र बनकर सतयुगी दैवी सृष्टि की मालिक बनती है। इन कर्तव्यों के कारण ही उस पिता परमात्मा की इतनी महिमा गायी जाती है। इस शिवलिंग की प्रतिमा अनेक नामों से गायी जाती है क्योकि जैसे-जैसे परमात्मा के कर्तव्य वैसे-वैसे नाम है, उसको सोमनाथ कहते हैं क्योकि उसने ज्ञान का सोमरस हम आत्माओं को पिलाया। इसी रिती से उसे भूतेश्वर कहते हैं, क्योकि उसने हम माया रूपी पांच विकारों के भूतों से बचाया है इसी प्रकार ओंकारेश्वर, विश्वेश्वर, भूतेश्वर, जगन्नाथ और भिन्न नाम उस एक शिव परमात्मा के ही भिन्न-भिन्न कर्तव्यों से पडे है।

शिव और शंकर के भेद-

जन- साधारण प्रायः शिव और शंकर में भेद नही समझते है शिव की प्रतिमा को ज्योर्तिलिंगम के रूप में पूजते है और शंकर को मनुष्य आकार देते हैं फिर भी भूल से यह मायन्ता चलती आ रही है। वास्तव में शिव और शंकर में उतना ही भेद है जितना बाप और बच्चे में हैं, महादेव शंकर तो ब्रह्मा, विष्णु और शंकर त्रिदेव में से एक है और सभी का रचयिता अथवा पिता वह ज्यार्तिलिंगम शिव है, ब्रह्मा का केवल स्थापना का कर्तव्य होता है परन्तु सर्वशक्तिवान परमात्मा तो स्थापना, पालना और विनाश तीनों का नियंता है इससे स्पष्ट कि ये देवता परमात्मा के रूप नही हैं बल्कि इनका रचयिता अथवा पिता परमात्मा इनसे अलग है। और वह है ही निराकार रूप वाला ज्यार्तिलिंगम शिव निराकार का यह अर्थ नही कि उसका कोई रूप नही इस शब्द का प्रयोग ही इस अर्थ मे ही किया जाता है कि वह साकार मनुष्यात्माओं और आकारी त्रिदेवों से भिन्न प्रकाश स्परूप है और उसका प्रकाश हजारों सूर्य से तेजोमय है अर्थात वह अव्यक्त होते हुए भी मूर्तवाला है ज्ञानसागर, प्रेमसागर, पतिपावन, दिव्यबुद्धिवाला, दिव्यचक्षु विधाता, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप निराकार परमपिता, शिक्षक एवं गुरू त्रिमुर्ति परमात्मा शिव न कि शंकर। इस भेद को समझना आवश्यक है क्योकि बिना यह बात समझे न हमारे योग उस पिता से लग सकता है न हमें उससे शक्ति प्राप्त हो सकती है।

त्रिमुर्ति परमात्मा शिव-

वास्तव में भगवान मत ही श्री अथवा श्रेष्ठ मत है जिसको वह ही जानते है तथा जिसके आधार पर ही इस आसुरी सृष्टि को दैवी अथवा पतित सृष्टि को पावन बनाते हैं यह श्रेष्ठ मत वह धर्म ग्लानि के समय अथवा कलियुग के अंत में स्वयं अवतरित होकर देते हैं, उस सहज ज्ञान एवं सहजयोग को ही भगवान की गति यानि श्रीमद्भगवत गीता कहते हैं। परन्तु भगवान का अवतरण इतने गुप्त तरीके से होता है कि उसे करोड़ों में कोई ही जान पाता है तभी तो गीता के भगवान ने कहा है कि साधारण मनुष्यों के तन में विचरते देख मुझे मूढ मति लोग नहीं पहचानते। मै जो हूं और जैसा हूं वैसा मुझे कोटियों में कोई जानते हैं और ऐसे जानने वालों में से भी कोई बिरले मेरे द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलकर मुझे पूर्ण रिती से प्राप्त करते हैं। अव्यक्तमूर्त अंगुष्ठाकार ज्यार्तिलिंगम शिव परमात्मा जो मनुष्य सृष्टि का बीजरूप एवं अजन्मा है वह इस पतित सृष्टि को पावन बनाने हेतु प्रकृति का आधार लेते हैं, आर्कषणमूर्त श्री कृष्ण तो गीता माँ की प्रथम संतान है जो गीता ज्ञान के आधार पर सतयुगी दैवी सृष्टि के प्रथम राजकुमार बनते हैं और बड़े होकर श्री-नारायण नाम पर वैकुण्ठ सृष्टि पर राज्य करते हैं गीता के गायक के बारे में इस भयंकर भूल के कारण ही इस ग्रण्थ को, जो वास्तव में सभी मनुष्य मात्र के माता है, मान्यता में इतनी गिरावट हो गयी है यदि यह भूल ठीक हो जाये और मनुष्यों को पता चले कि गीता का गायक वास्तव में सारी मनुष्य सृष्टि का बीजरूप परमात्मा निराकार त्रिमुर्ति शिव है न कि श्री कृष्ण तो गीता को पल भर में ही सर्व धर्मो के लोग मान्यता देने लगे।

शिव जयन्ति का महत्व-

हम सब मनुष्य आत्माओं का पिता, शिक्षक व सतगुरू त्रिमुर्ति परमात्मा ज्योर्तिलिंगम शिव जब कलियुग के अंत और सतयुग प्रारम्भ के संगम समय पर अवतरित होते हैं तो वह इस सृष्टि के सभी बच्चों को यही संदेश देते हैं कि हे- बच्चों अब तुम पवित्र और योगी बनों पांच विकारों रूपी माया से ग्रसित होने के कारण ही तुम इतने दुखी और अशान्त हुए हो अब इन विकारों को छोड़ो तो स्थायी सुख—शान्ति की प्राप्ति कर सकते हो इन विकारों पर विजय प्राप्त करने की युक्ति भी बताते हैं कि मै जो हूं जैसा हूं उस रूप से मुझे याद करने से तुम्हे मेरे द्वारा वह शक्ति अथवा योगबल की प्राप्ति होगी जिस बल के आधार पर तुम विकारों पर सहज ही विजय प्राप्त कर सकेंगे वर्तमान समय वह संदेश पुनः मिल रहा है।

अतः शिव जयन्ति को यदि यर्थाथ रूप से मानना है तो सभी मनुष्य आत्माओं के लिए आवश्यक है कि वे त्रिमुर्ति परमात्मा ज्यार्तिलिंगम शिव के वास्तविक परिचय अथवा उसके नाम, रूप गुण, कर्तव्य और धाम को जानकर उससे अपना योग जुटावे और विकारों रहित होने का दृढ संकल्प अपने मन में धारण कर उस पुरूषार्थ में लग जायें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचस

www.bkvarta.com